RAF SECTOR
NEWS CLIP
03/03/2021

TO SERVE HUMANITY WITH SENSITIVE POLICING

Prabhat Khabar , Jamshedpur (JKD)

सीआरपीएफ की महिला बटालियन ने रचा इतिहास

बुलंद हौसले

महिलाएं कला, विज्ञान, राजनीति, खेल जैसे क्षेत्रों में देश का नाम रोशन कर रही हैं, तो देश की सुरक्षा के मामले में भी पीछे नहीं हैं. दिल्ली मेट्रो या माता वैष्णो देवी मंदिर की सुरक्षा हो या फिर श्रीनगर के मुश्किल हालात से लेकर अमरनाथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सेवा, इन्होंने अपने जज्बे से नयी इबारत लिखी है. देश के दूर-दराज व पिछड़े इलाकों से आयीं ये महिलाएं देश की सुरक्षा में पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं. इनमें से कई वीरांगनाएं ऐसी हैं, जिन्होंने बेहिसाब मुश्किलों और चुनौतियों को झेला. कभी समाज ने, तो कभी परिवार ने रोका, लेकिन देश की मिट्टी के प्रति प्यार, दिल में जज्बा व बुलंद हौसला लिए ये कभी किसी मुश्किल से नहीं डरीं. इनका सफर आसान नहीं था, लेकिन कभी इन्होंने हार नहीं मानी. नारी सशक्तिकरण की दिशा में सीआरपीएफ की महिला बटालियन ने नया आयाम जोड़ा है. इनके अटूट हौसले और जज्बे को सलाम करती लाइफ@जमशेदपुर के लिए रीमा डे की रिपोर्ट.

आम महिलाओं को मिला हौसला

- देश के प्रमुख स्थानों पर महिला बटालियन की तैनाती से न सिर्फ आम महिलाओं का हौसला बढ़ा है, बल्कि उनमें सुरक्षा और विश्वास की भावना का संचार भी हुआ है. सीआरपीएफ की महिला बटालियन ने अपने कार्यों से देश को यह आभास करा दिया है कि उसे इस बटालियन की जरूरत हमेशा से थी. एक स्वर में पूरे जोश के साथ वंदे मातरम् और जय हिंद का नारा लगाती ये महिलाएं अनूठी मिसाल पेश करती हैं.

लाइबेरिया में संरा के शांति मिशन को बनाया सफल

- सीआरपीएफ की महिला बटालियन के कदम जब खेल के मैदान में पड़े, तो कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक अपनी झोली में डाले. इसकी बदौलत कई वीरांगनाओं की पदोन्नति भी हुई. सीआरपीएफ की महिला बटालियन ने ऊंची उड़ान तब भरी, जब संयुक्त राष्ट्र ने अपने प्रयासों में इन्हें शामिल करने की पहल की. इसके तहत पहली बार किसी महिला बटालियन को संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन पर लाइबेरिया भेजा गया. यह मिशन भी सफल रहा.

1987 में महिलाओं को मिली सीआरपीएफ में एंट्री

- सीआरपीएफ में नारी बल की परिकल्पना पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी ने की थी. 1986 में उनकी यह परिकल्पना साकार हुई. महज एक साल बाद, यानी 1987 में सीआरपीएफ की महिला बटालियन की पहली पासिंग आउट परेड हुई, जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने स्वयं उपस्थित रहकर उनके हौसले को सलामी दी.

सीआरपीएफ का अहम हिस्सा है रैफ

- रैफ (रैपिड एक्शन फोर्स) सीआरपीएफ का एक अहम हिस्सा है. अर्द्ध सैनिक बलों में एकमात्र केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में ही पांच महिला बटालियन हैं. मार्च 1987 में प्रशिक्षण के उपरांत 88 (महिला) बटालियन ने मेरठ दंगों और श्रीलंका में आइपीकेएफ के साथ किये गये कार्यों के लिए सराहना बटोरी. दूसरी महिला बटालियन (135 बटालियन) की कर्मियों ने वर्ष 1996 में विभिन्न राज्यों में हुए लोकसभा चुनाव में प्रशंसनीय कार्य किया.

स्वीमिंग वाटर पोलों में जीत चुकी हैं गोल्ड

हाथ में एके-47 थामे वह दुश्मनों का मार गिराने का हौसला रखती हैं, तो वहीं खुद धक्के और चोट खाकर भी आम लोगों को सुरक्षा देते हुए अपनी जिम्मेदारी पूरी निष्ठा के साथ निभाती हैं. मणिपुर की टीएच बेमचा देवी न केवल एक जांबाज सिपाही हैं, बल्कि देश को गोल्ड मेडल भी दिलवा चुकी हैं. स्वीमिंग वाटर पोलो की खिलाड़ी रह चुकी बेमचा देवी ने वर्ष 1999 में बेंगलुरु में आयोजित सीनियर नेशनल गेम्स में गोल्ड मेडल अपने नाम किया था. वह वर्ष 1993 में सीआरपीएफ से जुड़ीं और वर्तमान रैफ में हैं. एक पत्नी और मां दोनों की जिम्मेदारी बखूबी निभाते हुए वह सतर्कता के साथ अपनी ड्यूटी भी दे रही हैं. पिछले दिनों पुरी में आयोजित रथयात्रा के दौरान उन्होंने अपनी टीम के साथ श्रद्धालुओं की सेवा दी. बेमचा बताती हैं कि 2000 से वह 106 बटालियन में हैं. इसके पहले वह अलीगढ़ में थीं. बचपन से उन्हें घूमने का शौक था. सीआरपीएफ ज्वाइन करने के बाद उनके मन में देश सेवा की भावना जगी.

ब्लैक कमांडो रह चुकी हैं विमला चक्रवर्ती

मूल रूप से मध्यप्रदेश (जबलपुर) की इंस्पेक्टर विमला चक्रवर्ती 2019 में 106 बटालियन रैफ से जुड़ीं. एथलेटिक्स की नेशनल प्लेयर और देश को गोल्ड मेडल दिलवा चुकी विमला हमेशा से ही फौज में जाना चाहती थीं. पिता ने हर कदम पर उनका हौसला बढ़ाया. उनके हौसले का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एक ऐसा क्षेत्र, जहां ट्रेनिंग के दौरान पुरुष तिलमिला जाते हैं, फायरिंग से लेकर दौड़ तक सभी में उत्कृष्ट होना पड़ता है, उसमें वह ब्लैक कमांडो (नेशनल सिक्युरिटी गार्ड) की ट्रेनिंग पूरी कर वापस लौटीं. ट्रेनिंग के बाद पांच साल तक वह उत्तर प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती की सुरक्षा में तैनात रहीं. विमला वर्तमान 106 बटालियन में हैं. उनके पति रेलवे में नौकरी करते हैं. दो बच्चों की मां विमला कहती हैं कि देश की सुरक्षा उनके लिए सर्वोपरि है. इसी जज्बे के कारण उन्हें सम्मान स्वरूप डीजी डिस्क मिला है.

नक्सलियों से मुठभेड़ हो या कोविड-19 ड्यूटी, सानी नहीं

रांची में जन्मी, पली बढ़ी किशोरी तिर्की की बचपन से ही देश के लिए कुछ करने की इच्छा थी. महिला पुलिस कर्मियों को देख वह उनके जैसा बनने के बारे में सोचती थी. मैट्रिक के बाद किशोरी ने सीआरपीएफ में जाने की तैयारी शुरू की. वर्ष 1990 में सीआरएफ से जुड़ीं. दिल्ली में नौ महीने की ट्रेनिंग के बाद गुवाहाटी में उनकी पोस्टिंग हुई. गुवाहाटी में दो साल की ड्यूटी के दौरान उन्होंने कई बार नक्सलियों का डट कर सामना किया. 93-94 में श्रीनगर में हिंदू-मुस्लिम विवाद के दौरान उन्होंने सेवा दी. इस विवाद में एक महिला जवान रेखा शहीद हो गयीं. 2019 में 106 बटालियन (रैफ) में आयीं. कोविड-19 के दौरान उन्हें मेरठ भेजा गया. जहां निष्ठापूर्वक अपनी ड्यूटी निभाने के लिए किशोरी को प्रशंसा पत्र मिला है.

शरीर पर लगी चोटों पर नहीं दिया ध्यान, पूरी की ट्रेनिंग

विनीता एक्का ओडिशा से हैं. ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर विनीता ने तैयारी शुरू की और 2010 में वह सीआरपीएफ से जुड़ीं. वह बताती हैं कि टीवी पर महिला जवानों को परेड व अन्य एक्टिविटी करते देख वह प्रभावित हुईं. उसी समय सोच लिया था कि वह सीआरपीएफ से जुड़ेंगी. वह बताती हैं कि ट्रेनिंग मुश्किल जरूर थी, पर उन्होंने हार नहीं मानी. साधारण परिवार में पली बढ़ी विनीता के लिए यह फील्ड बिल्कुल ही अलग था. ट्रेनिंग के दौरान कई बार चोट लग जाती थी. ऐसा भी समय आया, जब विनीता को लगा कि शायद वह ट्रेनिंग पूरी नहीं कर पायेंगी. लेकिन बाकी लड़कियों को देख उनमें हौसला जगा. चोट पर मरहम-पट्टी कर उन्होंने ट्रेनिंग पर ध्यान केंद्रित किया. विनीता को यूएन मिशन पर भेजा गया है. इसके लिए उन्हें कड़े सेलेक्शन प्रोसेस से गुजरना पड़ा.

शादी के बाद की मैट्रिक फिर सीआरपीएफ से जुड़ीं

106 बटालियन रैफ में सिपाही रांची की अनीता ने खूंटी से पढ़ाई पूरी की है. तीसरी कक्षा में थीं, तब सिर से पिता का साया उठ गया. तीन बेटी और तीन बेटों के भरण पोषण की जम्मेदारी मां के कंधों पर आ गयी. खेती बारी कर किसी तरह गुजारा चल रहा था, लेकिन मां की बीमारी ने पूरे परिवार को हिला कर रख दिया. मैट्रिक की परीक्षा देने के पहले ही शादी कर दी गयी थी. एक बच्चा होने के बाद उन्होंने फिर से मैट्रिक की परीक्षा दी और फर्स्ट डिवीजन में पास हुईं. अपने सपने के बारे में पति को बताया, तो उन्होंने न केवल मनोबल बढ़ाया, बल्कि हर कदम पर साथ दिया. इस तरह रांची की अनीता सीआरपीएफ से जुड़ीं. दो बच्चों की मां अनीता बताती हैं कि वह जब ड्यूटी में रहती हैं, तो उनके लिए देशवासियों और देश की सुरक्षा सबसे अहम है.

Photos of Deployment/Fam-Ex Of RAF

सी०आर०पी०एफ० सदा अजेय, भारत माता की जय।